Vol 4 Issue 3 Dec 2014

ISSN No : 2249-894X

Monthly Multidisciplinary Research Journal

Review Of Research Journal

Chief Editors

Ashok Yakkaldevi
A R Burla College, India

Flávio de São Pedro Filho
Federal University of Rondonia, Brazil

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies, Sri Lanka

Welcome to Review Of Research

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2249-894X**

Review Of Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial Board readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

Advisory Board

Flávio de São Pedro Filho
Federal University of Rondonia, Brazil

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies, Sri Lanka

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Fabricio Moraes de AlmeidaFederal
University of Rondonia, Brazil

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Xiaohua Yang
University of San Francisco, San Francisco

Karina Xavier
Massachusetts Institute of Technology (MIT), USA

May Hongmei Gao
Kennesaw State University, USA

Marc Fetscherin
Rollins College, USA

Liu Chen
Beijing Foreign Studies University, China

Mabel Miao
Center for China and Globalization, China

Ruth Wolf
University Walla, Israel

Jie Hao
University of Sydney, Australia

Pei-Shan Kao Andrea
University of Essex, United Kingdom

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Ilie Pintea
Spiru Haret University, Romania

Mahdi Moharrampour
Islamic Azad University buinzahra
Branch, Qazvin, Iran

Titus Pop
PhD, Partium Christian University, Oradea,
Romania

J. K. VIJAYAKUMAR
King Abdullah University of Science & Technology,Saudi Arabia.

George - Calin SERITAN
Postdoctoral Researcher
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences
Al. I. Cuza University, Iasi

REZA KAFIPOUR
Shiraz University of Medical Sciences
Shiraz, Iran

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

Nimita Khanna
Director, Isara Institute of Management, New Delhi

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University, Kolhapur

P. Malyadri
Government Degree College, Tandur, A.P.

S. D. Sindkhedkar
PSGVP Mandal's Arts, Science and
Commerce College, Shahada [M.S.]

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

C. D. Balaji
Panimalar Engineering College, Chennai

Bhavana vivek patole
PhD, Elphinstone college mumbai-32

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary, Play India Play (Trust),Meerut (U.P.)

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance
Education Center, Navi Mumbai

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

Jayashree Patil-Dake
MBA Department of Badruka College
Commerce and Arts Post Graduate Centre
(BCCAPGC),Kachiguda, Hyderabad

Maj. Dr. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

AR. SARAVANAKUMARALAGAPPA
UNIVERSITY, KARAIKUDI,TN

V.MAHALAKSHMI
Dean, Panimalar Engineering College

S.KANNAN
Ph.D , Annamalai University

Kanwar Dinesh Singh
Dept.English, Government Postgraduate
College , solan

More.........

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.ror.isrj.org

Review Of Research
Vol. 4 | Issue. 3 | Dec. 2014
Impact Factor : 2.1002 (UIF)
ISSN:-2249-894X
Available online at www.ror.isrj.org

ORIGINAL ARTICLE

साहित्यकारों की आत्मकथाएँः प्रमाता के अन्तःकरण पर विशिष्ट छाप

किरण ग्रोवर

एसो. प्रो., स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग ,डी. ए. वी. कॉलेज, अबोहर।

सारांश:

आत्मकथा बहिर्मुख होने की अपेक्षा अर्न्तमुखता की ओर प्रयाण करती है। साहित्यकारों की आत्मकथाएँ तथ्याश्रिता के आधार पर अन्तर्मुखी मन से निजता का निर्वाह करके प्रमाता के अन्तःकरण पर विशिष्ट छाप प्रत्यंकित करती हैं।साहित्य के अध्येता को साहित्यकारों का सम्पूर्ण परिचय जानने की विशेष उत्सुकता रहती है कि साहित्यकार ने किन परिस्थितियों में साहित्य का निर्माण किया। साहित्यकार अपनी आत्मकथाओं में जीवन के सामाजिक व असामाजिक प्रेम सम्बन्धों को संवेदनशीलता के साथ उकेरता है। साहित्यकारों यथा बनारसीदास, सेठ गोविंद दास, देवराज उपाध्याय, हरिवंश राय बच्चन, अमृता प्रीतम, कमलादास, दिलीप कौर, शिवानी, नगेन्द्र, राजेन्द्र यादव, भीष्म साहनी ,विष्णु प्रभाकर ,मन्नू भण्डारी व मैत्रेयी पुष्पा जा ने आत्मविश्लेषण की प्रक्रिया में सक्रिय होकर प्रमाता को अपने जीवन के यथार्थ से परिचित करवाया है, तथा अपनी संवेदनाओं, को विवेचित करके जीवन की जकड़ से मुक्त होने का अहसास पाया है।

बीज शब्दः—

साहित्यकारों आत्मकथा, प्रमाता, संवेदना, अन्तःकरण।

मूल प्रतिपादनः—

मानसिक प्रौढ़ावस्था में जब प्रख्यात व्यक्ति अपने अतीत पर दृष्टिपात करते हुए घटनाओं, पात्रों, स्थितियों, परिस्थितियों आदि का निष्पक्ष होकर शृंखलाबद्ध वर्णन करता है, जो उसके व्यक्तित्व निर्माण में साधक या बाधक रही हों, तो वह कृति आत्मकथा कहलाती है। आत्मकथाकार बहिर्मुख होने की अपेक्षा अर्न्तमुख होकर ही आत्मकथा लेखन की ओर प्रवृत्त होता है। इस प्रक्रिया में वह अपने स्वजनों, परिजनों एवं इष्ट मित्रों तक से अलग होता हुआ आत्मकथा लिखता है जिसमें अपनी कथा कहने के साथ साथ अपनों की कथा कहने का अधिकार सहज ही प्राप्त कर लेता है। यही वह ध्रुव है जहाँ वह वैयक्तिकता से सामाजिकता की ओर उन्मुख होता है; अतः आत्मकथाकारों के जीवन का विशेष अध्ययन जहाँ कथानायक के जीवन की सफलता का दिग्दर्शन करवाता है तथा वहाँ पाठकीय जिज्ञासा का भी शमन करता है। साहित्य के अध्येता को साहित्यकारों का सम्पूर्ण परिचय जानने की विशेष उत्सुकता रहती है कि साहित्यकार ने किन परिस्थितियों में साहित्य का निर्माण किया। कबीर, तुलसी, सूर आदि प्रशस्त लेखकों का जीवन परिचय कल्पनाओं, किंवदंतियों के घेरे में आबद्ध है। यदि इस युग में आत्मकथा विधा का विकास होता तो आज हमारी पाठकीय जिज्ञासा निराश न होती।[1]

साहित्यकारों की आत्मकथाएँ तथ्याश्रिता के आधार पर अपना पृथक् रूपभेद निर्मित करती हुई प्रमाता के अन्तःकरण पर विशेष छाप छोड़ती हैं। अन्तर्मुखी मन एवं उसकी निजता का निर्वाह साहित्यिक आत्मकथा की लाक्षणिक विशेषताओं में प्रथम है— यौन कुण्ठाहीनता। जीवन यात्रा की दूरी तय कर लेने के बाद पीछे मुड़ कर देखता साहित्यकार

आत्मकथा लेखन के समय जीवन के सामाजिक व असामाजिक प्रेम सम्बन्धों को पर्याप्त सहृदयता व संवेदनशीलता के साथ परखता और उकेरता है। अपने सृजनशील लेखक व्यक्तित्व में बीते क्षणों में प्राप्त आशा–निराशा, पीड़ा ग्रन्थि, सुख–दुःख को भी स्वीकारता है।[2] अपने वर्तमान में अतीत की स्थितियों से तटस्थ होता हुआ एक ओर सहृदय के अंकन के माध्यम से मानव मन को रूपायित करता है तथा दूसरी ओर सामाजिक व्यवस्था उसके कसाव, उसकी विडम्बना और उसके भागते–चलते व्यक्ति की कथा भी सुनाता है। बाह्य यथार्थ और निजी भावनाओं के प्रति आत्मकथाओं की संवेदनशीलता में ऐसा सहज सम्प्रेषण होता है कि पाठक गहन आत्मीय विवशता से जुड़ जाते हैं। हिन्दी के आदि आत्मकथाकार बनारसीदास ने एक विदेह चिन्तक हो कर जीवन स्वरूप को सत्कर्मों और दुष्कर्मों के साथ प्रस्तुत कर लेखकीय ईमानदारी को सशक्तता के साथ प्रतिस्थापित किया है। अपनी सम्पूर्ण सामाजिक, पारिवारिक तथा संस्कारबद्ध रूढ़ियों से तटस्थ होकर बनारसीदास जी ने विलासिता, आचारहीनता आदि को वर्णित किया है–

चोरे चुन्नी मानक मनी। आनै पान मिठाई घनी।
'मिथ्या ग्रन्थ' की रचना में आत्मकथाकार माता–पिता की सीख न मानने को स्वयं अपराधी मानता है।[3]
कै पढ़ना कै आसिकी मगन दोय रस माहिं

आत्मकथाकार बनारसीदास जी अपनी विशिष्ट तटस्थता के कारण पाठको की जीवन्त करुणा के अधिकारी बन सके हैं।

सेठ गोविंद दास जी ने 'आत्मनिरीक्षण' के तीनों भागों के अध्ययन के उपरान्त यही निष्कर्ष निकाला है कि सत्य के प्रति अत्यधिक आग्रह ने उनकी दुर्बलताओं तक को प्रकट करने के लिए बाध्य किया है। 'आत्मचरित' की सबसे पहली कसौटी है कि वह मिथ्या से दूर रहकर केवल सत्य पर आधारित हो।4 लेखक ने 'आत्मनिरीक्षण' में कुछ ऐसी घटनाओं का समावेश किया है, जिससे ज्ञात होता है कि इसका लेखक सत्य से दूर नहीं गया यथा–

''काम चेतना की स्पष्ट भावनाएँ मेरे मन में लगभग पन्द्रह वर्ष की अवस्था से उठने लगीं और ये उठीं ललित कला से सम्बन्ध रखने वाले कुछ गन्दे साहित्य के पढ़ने, उस समय की पारसी नाटक कम्पनियों के कुछ अश्लील नाटक देखने तथा एक महिला के कारण, जो हमारे कुल की एक निकट की रिश्तेदार थी।''[5]

महिला के प्रति आकर्षण और लुक–छिप कर की जाने वाली प्रेमलीला को 'आत्मनिरीक्षण' में सजीव रूप में व्यक्त किया है–

''जिन मेरी नातेदार महिला के प्रति मैं आकृष्ट हुआ.......वे विवाहिता थी ....वर्ण में गौर, सारे अंग–प्रत्यंग ढले हुए, नेत्र सबसे अधिक आकर्षक..........मेरी इस प्रेयसी का और मेरा सम्बन्ध धीरे–धीरे बढ़ चला.............एक दिन यों ही उनकी ओर देखते–देखते एकान्त में मैंने उनकी आँखों को चूम लिया...........कुछ क्षणों के बाद ही मेरे इन चुम्बनों की श्रृंखला–सी बंध गई।''[6]

देवराज उपाध्याय जी ने यौवनकाल के निजी मनःस्फुरणों को कुशलता के साथ चित्रित किया है। उनकी दृष्टि में यौवन की महत्वाकांक्षाओं, विद्रोह अनवांछित स्वतन्त्रता का पर्याय है। ऐसी दुर्बलताओं का चित्रांकन करने के लिए नैतिक साहस की आवश्यकता होती है। यही नहीं सत्य का आधार ग्रहण करने के ही कारण ही लेखक अपने पिता के वेश्यागामी होने का भी वर्णन किया है। स्वयं को अनुशासित करने के लिए अपने युवाकालीन, प्रायश्चित के विघनों और उसके उल्लंघनों को आत्मकथाकार ने सहज रूप में स्वीकारा है। 'यौवन के द्वार पर' में डॉ. देवराज ने फ्रायड शैली में घोषित किया है कि यौन भावना से मुक्त काल की स्मृति का आत्मकथाकार के पास नितान्त अभाव है यथा–''यौन आकर्षण ही जवानी का चिह्न है ....मुझे ऐसा कोई समय याद नहीं आया, जब मैं यौन भावनाओं से मुक्त होऊँ.......... जब कभी गलती से या जानते–बूझते मेरी चादर पर छींटे पड़े हैं, मैंने तुरन्त उसे साबुन से साफ किया है, प्रायश्चित किया है, अपने को दण्डित किया है।''[7]

अपने किशोर वय की आवारागर्दी को पंडित बेचन प्रसाद 'उग्र' जी ने ऊबड़–खाबड़ व्यक्तित्व की अक्खड़ता के साथ बेलौस अभिव्यक्ति दी है, यथा–''मेरा ख्याल है कि इश्क क्या है, इसका पता मुझे इसी मण्डली में 12 साल की वय में लग गया था। बारह साल की उम्र में मैं सतरह साल की एक अभिपमा श्यामा पर ऐसा आशिक हो गया ....उस सुन्दरी के लिए मैं सारा दिन बेचैन रहा करता था कि कब रात हो, कब उसके मादक–स्वादक मयंक मुख के दर्शन हों।''[8]अपने प्रथम भावनात्मक प्रेम की ईमानदारी को उग्र जी ने साहित्यिक तकनीकी शब्दावली में संजोया है, यथा– ''मेरा प्रथम और अन्तिम प्रेम भी वही था। उसके बाद जो मामले हुए उसी शाश्वत साहित्य के संक्षिप्त सस्ते संस्करण मात्र थे।''[9]

हरिवंश राय बच्चन जी ने गहरी संवेदनशील अन्तर्दृष्टि के साथ अपने यौवन के अतीत का स्मरण किया है। अपने वर्तमान के प्रति सजग रहकर सामाजिक, असामाजिक प्रेम सम्बन्धों को नैतिकता और अनैतिकता की रूढ़ मान्यताओं से तटस्थ होकर सहज आत्मीय शैली में प्रतिपादित किया है। चम्पा के साथ अपने भावनात्मक व दैहिक सम्बन्धों को संवेदनशीलता के साथ चित्रित किया है– ''रातों की अधसोई भारी–भारी पलकों के नीचे अपने अधखुले लम्बे नेत्रों से मुझे देखा, तो मुझे लगा जैसे वह मुझे अपनी आँखों से पी रही है।''[10]

चम्पा के गर्भवती होने, लोक–लाज भीता वृद्ध ब्राह्मणी की असहायावस्था व बच्चन जी का उसके सम्मुख अपराधी मन से कातर वर्णन पाठक के मर्म को संस्पर्शित करता है, यथा–''उसने मुझे बुलाया और एक बार चम्पा की ओर

देखकर अपनी कील–सी चुभने वाली ब्रह्म तेजमयी आँखों से मुझे ऐसे देखा जैसे वह मुझे वहीं दग्ध करके क्षार कर देगी।''[11]

अपनी रचना 'नीड़ का निर्माण फिर' में बच्चन जी ने नारी आकर्षण के प्रति प्रत्येक पल सचेतनता को अनुभूत किया हैं। जब तेजी उसके जीवन में प्रविष्ट हुई, तब उनको ढाल बनाकर काव्य सृजन करते हुए बच्चन जी ने लिखा है– ''मेरा कवि, मेरा व्यक्तित्व की ओर से तेजी के प्रति कृतज्ञता ज्ञापन के लिए इससे अधिक सुकुमार कुसुमांजलि नहीं समर्पित कर सकता था।''[12]

लेखिका अमृता प्रीतम आत्मकथा को स्वयं ही पारिभाषित करती हैं–आत्मकथा यथार्थ से यथार्थ तक पहुँचने की प्रक्रिया है। अमृता प्रीतम ने ईमानदारी से प्रस्तुत किया है, जब पति के प्रति अन्याय की बात मन पर एक अनूठा प्रभाव छोड़ जाती है। जब वे स्वयं इमरोज़ की दोस्ती में खुश हैं, परन्तु साथ ही पति के दर्द को खुद महसूस करती हैं। उनका कथन है–''हम अब भी दोस्त की तरह मिलते हैं, पर जानती हूँ इतनी–सी चीज़ अकेलेपन को नहीं भर सकती। अकेलेपन का शाप जिस भी अच्छे मनुष्य ने झेला है, उसके आगे सिजदे में सिर झुक जाता है।''[13]

कमलादास ने 'मेरी कहानी' नामक आत्मकथा में लघुता ग्रन्थि की ऊँची–नीची लहरों में से गुज़रते हुए संघर्ष का सामना किया है। यह आत्मकथा अन्तर्जगत की आत्मकथा है, जिसमें लेखिका के अन्तरंग जीवन के दर्शन होते हैं। पूरी कृति में वे पति का विरोध करती हैं, परन्तु जब उनके पति का कोई अन्य अधिकारी विरोध करता है, तो वे सहानुभूति से पति के साथ जुड़ जाती है। यह वैशिष्ट्य लेखिका के चरित्र का मूल्य आंक देता है। लेखिका का कथन है, ''अक्सर मैं चाहती हूँ कि अपना अंग–अंग उधेड़कर किसी 'कैनवस' पर 'कोलाज' बना हूँ। एक बड़े से कैनवस पर चिपकाकर अपना दिल, जिगर, आंतें, प्रजनन अंग, खाल और बाल तक और फिर दानकर दूँ अपने पाठकों को वह पेंटिंग। मेरा कुछ भी तो दबा–छिपा नहीं है, उससे गोपनीय नहीं, कोई भेद नहीं, जब–जब मैं रोई हूँ, मेरे पाठक साथ रोये हैं।''[14]

श्रीमती दिलीप कौर टिवाणा ने 'नंगे पैरों का सफ़र' में विवाहिता होते हुए भी कुमारिका रहने का दुर्भाग्य और दुःख ही शायद लेखिका को अपनी कहानी कहने के लिए विवश करता प्रतीत होता है। उनका कथन है– ''वास्तव में मुझे अपनी आत्मकथा यहीं से प्रारम्भ करनी चाहिए थी, क्योंकि वस्तुतः आज ही पहली बार मैं थी।''[15] लेखिका विवाह की तुलना एक भूचाल से करती है, जो एकबारगी आता है और गुज़र जाता है, परन्तु वह भूचाल भीतर से सबकुछ तोड़–फोड़ गया है और टिवाणा जी को सतही स्तर पर जीवित रहने के लिए विवश कर गया है। इसके अतिरिक्त एक अन्य घटना जिसमें लेखिका बेबाक प्रदर्शित करती हैं, जब एक अधेड़ वाइस प्रिंसीपल लेखिका के पास विवाह का प्रस्ताव रखता है। इसके उत्तर में लेखिका का कथन ''आपने ऐसा साहस कैसे कर लिया?'' पाठक को अभिभूत कर देता है। अपने विशिष्ट 'स्व' को अभिव्यक्त करके लेखिका ने जीवनदर्शन को ही रूपायित किया है।

शिवानी जी ने 'सुनहूँ तात यह अकथ कहानी' नामक आत्मकथा में अपने निजत्व का विश्लेषण करके जीवन की वास्तविकता का अवलोकन किया है। लेखिका के शब्दों में– ''इसमें कोई सन्देह नहीं कि पृथ्वी में विरले ही युग्मात्मा यथार्थ के साथ विवाह सूत्र में आबद्ध होते हैं। युग्मात्मा के साथ अगर मन का मिलन हुआ, तो पति–पत्नी यथार्थ सुख का उपभोग नहीं कर सकते, जब तक देह और मन का सम्यक् मिलन न हो,वह यथार्थ में मिलन नहीं कहा जा सकता, किन्तु यदि ऐसा मिलन हो जाए उस विच्छेद की व्यथा भी फिर साधारण व्यथा नहीं होती।''[16]

हिन्दी आत्मकथा साहित्य के वैभवकाल में वैविध्यपूर्ण आत्मकथाकार डॉ. नगेन्द्र जी ने 'अर्द्धकथा' के अन्तर्गत जीवन सत्यों को अभिव्यक्त करके आत्मकथा को विशिष्ट दान दिया है। आत्मकथा के अभिप्रेत को स्पष्ट करते हुए समाहार में विशिष्ट 'स्व' का प्रतिपादन किया है–''मेरे अन्तरंग जीवन के ये ही दो पाथेय रहे हैं–नारी का स्नेह संसार जहाँ मेरी साहित्य साधना को रसमय बनाता रहा है, वहाँ साहित्य साधना इस स्नेह संसार के सुख को अतिरेक दीप्ति प्रदान करती रही है।''[17]

साहित्य सृजन के मूल में लेखक का अहं किसी–न–किसी रूप में निहित रहता है। यह अहं ही लेखक को विशिष्ट प्रकार के कलात्मक सृजन के लिए प्रेरित करता है। आत्मकथाएँ स्वतः ही आत्मकथाकार के प्रयोजन को स्पष्ट करती है। आत्मकथा में जीवन के गूढ़ सत्य निहित होते हैं। इन सत्यों से जीवन को समुन्नत बनाने में सुविधा रहती है। राजेन्द्र यादव जी ने अपने आत्मकथ्यांश 'मुड़–मुड़ के देखता हूँ' के अन्तर्गत अतीत के गतिशील क्षण, कथा को रचनात्मक बनाने के तरकीबें, भविष्य में अतीत को संजोने की आकांक्षा का सविस्तार विवेचन किया है। यादव जी ने आत्मकथा को इस प्रकार पारिभाषित किया है– दूसरों की दी हुई स्मृतियों को छीलकर अपने वास्तविक की इसी तलाश का दूसरा नाम आत्मकथा भी हो सकता है। डॉ. यादव ने इस ग्रन्थ के नामकरण से रचना का मन्तव्य अतीत से सन्दर्भित किया है। राजेन्द्र यादव जी ने मन्नू भण्डारी के साथ अपनी अन्तरंगता के बावजूद अपनी परेशानी को व्यक्त किया है– '' यह सम्बन्ध मेरा सबसे बड़ा अन्तर्द्वन्द्व रहा है .... हम लोगों ने न कभी पज़ैशन; एकाधिकार की भावना महसूस की, न कभी ईर्ष्या की।''[18] राजेन्द्र जी ने अपने जीवन में ठहराव व गहराई प्रदत करने में मन्नू जी की भूमिका को सहज स्वीकार किया है।

भीष्म साहनी जी ने 'आज के अतीत' आत्मकथा के अन्तर्गत साहित्य सृजन को जीवन की सच्चाई की खोज स्वीकारा है तथा जीवनुभवों से नव्य दृष्टि, नूतन सूझ, लेखकीय संवेदना अवश्यमेव प्रभावित होती है। भीष्म साहनी जी ने शीला के साथ वैवाहिक सम्बन्ध स्थापित होने के उपरान्त स्वीकार किया कि शीला, विवाह से पहले कुछ समय तक मेरी छात्रा भी रही, मैं उसकी कक्षा को पढ़ाता भी रहा था। 'स्व' का निरूपण करते हुए साहनी जी ने अपनी व्यस्तता से भी

गुरेज़ नहीं किया– ''कल्पना हमारी बेटी उन दिनों बहुत छोटी थी ....अकसर हम अपने साथ ले जाते और स्टेज के पिछले भाग में सुला देते थे। सभी नाट्यकर्मियों को उसकी चिन्ता रहती थी।''[19] भीष्म साहनी जी ने लेखकीय संवेदना को जीवन के अनुभव से सन्दर्भित करके उपजाऊ भूमि के रूप में रचना को प्रतिपादित किया है।

विष्णु प्रभाकर जी ने 'और पंछी उड़ गया' नामक आत्मकथ्य में दिशाहीन सफर का वृतान्त तीन खण्डों में विस्तारित किया है। प्रभाकर जी ने प्रेम को कालातीत, शब्दातीत रूप देते हुए जीवन व मरण से परे स्वीकारा है। इन्होंने अपने दिशाहीन सफर की निमित्त अपनी पत्नी को स्वीकार किया है–''मेरी पत्नी ने अपने जीवनकाल में 'आवारा मसीहा' लिखवा दिया, तो विदा लेने के बाद 'कोई तो' उपन्यास और विशेषकर 'अर्द्धनारीश्वर' भी वो उसी ने लिखने को विवश किया।''[20] उन्होंने अपने जीवन अनुभवों से अमिट रेखाओं की तरह मन के पटल पर अनेक चित्र अंकित किए। पत्नी के बिछुड़ जाने के बाद उन्होंने उसके स्वभाव का स्पष्ट प्रत्यंकन किया है– ''उसमें प्यार करने की अद्‌भुत क्षमता थी। वैसी ही क्षमता थी अपने स्वाभिमान को अक्षुण्ण रखने की। उसका प्रेम, प्रेम था, स्वाभिमान– स्वाभिमान। प्रेम के लिए स्वाभिमान का बलिदान देना उसके लिए प्रेम का अपमान था।''[21]इस आत्मकथा के अन्तर्गत निजी भावनाओं के प्रति संवेदनशीलता को सहज रूप में सम्प्रेषित किया है।

मन्नू भण्डारी ने 'एक कहानी यह भी' आत्मकथा के अन्तर्गत लेखन में मिलने वाले प्रोत्साहन एवं गतिरोध को आवेगहीन तटस्थता के साथ प्रस्तुत किया है। अपने अनुभव को सीमित दायरे से निकालकर व्यापक सन्दर्भ के साथ जोड़ने की कोशिश की है। आत्मकथा की अनिवार्य शर्त तटस्थता की मांग के अनुरूप तथ्यों को विकृत न कर सहज रूप में उजागर किया है। मन्नू भंडारी जी ने राजेन्द्र यादव जी के साथ अपने सम्बन्धों को बेबाकी से स्वीकार किया है– ''राजेन्द्र की मित्रता जब धीरे–धीरे दूसरी दिशा की ओर मुड़ चली। यह परिवर्तन एकतरफा तो नहीं था, उसमें मेरी बराबरी की सहमति ही नहीं, सहयोग भी था .... और फिर ईमानदारी के साथ उस सबके पूरी तरह अतीत हो जाने का आश्वासन देकर भविष्य की योजनाएँ बनाई थीं।''22

मन्नू भंडारी जी ने यादव जी को अलगाव के बारे में साफ–साफ कहना शुरू किया, तब उनकी अर्न्तात्मा के शब्दों की ध्वनि गुंजायमान हो उठी– ''और आज बारह साल हो गए हैं, हमें अलग हुए........ पर राजेन्द्र के साथ रहते हुए भी तो मैं बिल्कुल अकेली ही थी। साथ रहकर भी अलगाव की, उपेक्षा व संवादहीनता की यातनाओं से इस तरह घिरी रहती थी सारे समय कि कभी अपने साथ रहने का अवसर ही नहीं मिलता था, ...मन के बचे–खुचे कोने भी पूरी तरह भर जाएँगे।''[23] मन्नू जी का अपने पति राजेन्द्र यादव जी से अलगाव होने के पश्चात् भी यादव जी के चिन्तन, मौलिक नज़रिए, प्रभावपूर्ण पारदर्शी भाषा–शैली के कारण उन्हें विशिष्ट स्थान पर रखा।

डॉ. मैत्रेयी पुष्पा ने 'कस्तूरी कुंडल बसै' नामक आत्मकथा के अन्तर्गत बचपन के लगाव, गुस्सा, ममता, अलगाव, निर्मोह की एक–एक भंगिमा को यथार्थ धरातल पर चित्रित किया है। परिवार की परिस्थितियाँ, इतिहास, वातावरण को केन्द्रबिन्दु में रखकर बीते जीवन की झांकी को रूपायित किया है। मैत्रेयी जी अपने पति के संग निजत्व का विश्लेषण करती हुई लिखती है– ''समय था जो दिन बनकर सोता और रात बनकर मुँह फेर लेता। सारे मुहूर्त बीमार ही चले। फिर भी इन्हें छूलाने की तमन्ना ने हार नहीं मानी, उन्हें हुआ मैत्रेयी ने दीठ की तरह।''[24] मैत्रेयी जी ने आत्मकथा के द्वितीय भाग 'गुड़िया भीतर गुड़िया' के अन्तर्गत सत्यता, तटस्थता व आत्मविश्वास के साथ पति के दिलचस्प नाटकीय सम्बन्धों तथा डॉ. सिद्धार्थ व राजेन्द्र यादव जी के साथ अपने सम्बन्धों को बेबाकी के साथ स्वीकार किया है– ''कितनी परेशान थी मेरी जान, सब राजेन्द्र यादव हौजखास से घर छोड़कर मयूर विहार गए। इतनी दुःखी तो तब भी नहीं थी, जब मैं विदेश गया, अलबत्ता डॉ. सिद्धार्थ के विदेश जाने पर रोई थी। मेरी पत्नी को दूसरों का बिछोह बहुत सालता है।''[25]

आत्मकथा की प्रत्यक्ष अभिव्यक्ति का गुण अन्तर्द्वन्द्व से पूर्णतया निवृत्ति दिला देता है। साहित्यकारों ने अपनी संवेदनाओं, अपेक्षाओं, उलझनों को आत्मकथा के अंशों में ने विवेचित करके उनकी जकड़ से मुक्त होने का अहसास पाया है। साहित्यकारों ने आत्मविश्लेषण व आत्म–परीक्षण की क्रिया में सक्रिय होकर अपने जीवन के यथार्थ से परिचय करवाया है, जिससे उनका विशिष्ट 'स्व' के रूप में प्रतिच्छायित हुआ है। आधुनिक काल में संख्या, गुणवत्ता की दृष्टि से श्रेष्ठ आत्मकथाओं का सृजन हुआ है। आज का व्यक्ति सीमाओं से बाहर निकलकर 'स्व' की बात अधिक सोचने लगा है लेकिन आत्मकथाकारों ने विशिष्ट व्यक्ति होने के नाते 'स्व' का अत्यधिक स्वच्छन्दता के साथ विश्लेषण किया है।

सन्दर्भ ग्रंथः–

1 .कमलेश सिंहः हिन्दी आत्मकथाः स्वरूप एवं साहित्य, नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, दिल्ली, 1989
2 .विश्व बन्धु 'व्यथित': हिन्दी का आत्मकथा साहित्य, राधा प्रकाशन, दिल्ली, 1989
3 बनारसीदासजैनः अर्द्धकथानक, स०नाथू राम प्रेमी, हिन्दी ग्रंथ रचनाकार,बम्बई, 1943
4 सेठ गोविन्द दासः आत्मनिरीक्षण, भाग 1, भारतीय विश्व प्रकाशन, दिल्ली, 1958
5.सेठ गोविन्द दासः आत्मनिरीक्षण, भाग 2, भारतीय विश्व प्रकाशन, दिल्ली, 1958
6.सेठ गोविन्द दासः आत्मनिरीक्षण, भाग 3, भारतीय विश्व प्रकाशन, दिल्ली, 1958
7 देवराज उपाध्यायः यौवन के द्वार पर, मंगल प्रकाशन, जयपुर, 1970,पृ 103
8 वही पृ 214

9 वही पृ 216
10. हरिवंश राय बच्चनः क्या भूलूँ क्या याद करूँ, राजपाज एंड सन्ज़, दिल्ली, 1969
11 वही पृ 161
12 हरिवंश राय बच्चनः नीड़ का निर्माण फिर, राजपाज एंड सन्ज़, दिल्ली, 1970
13 .अमृता प्रीतमः रसीदी टिकट अनु॰ बटुक शंकर भटनागर, पराग प्रकाशन, दिल्ली, 1977
14 कमलादासः मेरी कहानी, अनु॰ सुदर्शन चोपड़ा, सरस्वती विहार, दिल्ली, 1977
15. दिलीप कौर टिवाणा ::'नंगे पैरों का सफ़र'
16 शिवानीः सुनहूँ तात यह अकथ कहानी, हिन्दू पॉकेट बुक्स, दिल्ली 1998
17 नगेन्द्रः अर्द्धकथा, नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, दिल्ली, 1990
18 राजेन्द्र यादवः मुड़–मुड़ के देखता हूँ, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2001
19 भीष्म साहनीः आज के अतीत, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, 2003
20. विष्णु प्रभाकरः पंखहीन, राजपाल एंड सन्स, दिल्ली, 2010
21.विष्णु प्रभाकरः मुक्त गगन में, राजपाल एंड सन्स, दिल्ली, 2011
22. मन्नू भंडारीः एक कहानी यह भी, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली, 2007
23 वही पृ 47
24 मैत्रेयी पुष्पाः कस्तूरी कुंडल बसै, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, 2002
25 .मैत्रेयी पुष्पाः गुड़िया भीतर गुड़िया, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, 2008

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper,Summary of Research Project,Theses,Books and Books Review for publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- ✶ Directory Of Research Journal Indexing
- ✶ International Scientific Journal Consortium Scientific
- ✶ OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- DOAJ
- EBSCO
- Crossref DOI
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database

Review Of Research Journal
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.ror.isrj.org